IJAER/March-April 2016 /Volume-4/Issue-5 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

बाल श्रम और उसके परिणामों के सामाजिक प्रभाव पर एक अध्ययन

डॉ० संतोष कुमारी

एसोसिएट प्रोफेसर

एवं अध्यक्षा॰ समाजशास्त्र विभाग

जे०के०पी०पी०जी० कॉलेज मुजफ्फरनगर

सार

बाल श्रम कई दशकों से एक गंभीर समस्या है और कई विकासशील देशों के लिए एक चुनौती है। यह सदियों से न केवल विकासशील देशों के गरीब क्षेत्रों में बल्कि विकसित देशों में भी 20वीं शताब्दी की शुरुआत तक मौजूद है। कई देशों ने बाल श्रम के उन्मूलन के लिए विभिन्न कानून बनाए हैं और गंभीर पहल की है, फिर भी यह समस्या पूरे विश्व में बहुत व्यापक है। बाल श्रम की समस्या गंभीर रूप में सामने आती है और इसके साथ कई कारक जुड़े हुए हैं। भारत में बाल श्रम की घटनाओं के कारण जटिल हैं और समाज में गहराई से निहित हैं। गरीबी इसका प्रमुख कारण प्रतीत होता है। बाल श्रम शहरी और ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में पाया जा सकता है। हालाँकि, बाल श्रम का अधिकांश हिस्सा ग्रामीण क्षेत्रों में होता है क्योंकि गरीबी अधिक व्याप्त है। हालांकि कई गरीब ग्रामीण परिवार शहरी क्षेत्रों में बेहतर जीवन के लिए संघर्ष करते हैं, यह परिवारों को परिवार की आय बढ़ाने और अस्तित्व सुनिश्चित करने के लिए अपने बच्चों को काम करने के लिए मजबूर करता है।

बाल श्रम लंबे समय से सबसे महत्वपूर्ण और अमानवीय सामाजिक बुराइयों में से एक रहा है, जिसके सामाजिक विकास की प्रक्रिया के लिए गंभीर बाधाएँ हैं। बाल श्रम के सभी रूपों को समाप्त करना कई देशों में एक चुनौती और दीर्घकालिक लक्ष्य है। खासतौर पर विकासशील देशों में इसे आजकल एक गंभीर मुद्दा माना जाता है। बाल श्रम से तात्पर्य उन बच्चों से है जो अपने बचपन को याद करते हैं और उन बुनियादी सुविधाओं को प्राप्त करने में सक्षम नहीं होते हैं जो एक बच्चे के पास होनी चाहिए। (2013) के अनुसार बाल श्रमिकों की सबसे बड़ी संख्या खतरनाक काम में काम कर रही है और बाल श्रमिकों की कुल संख्या बढ़ रही है, भले ही यह कानून द्वारा प्रतिबंधित है। ये बच्चे बीमारियों की चपेट में आ जाते हैं और ये लंबे समय तक शारीरिक और मानसिक दर्द से जूझते रहते हैं। बच्चों को काम करने के लिए प्रेरित करने वाला मुख्य कारण गरीबी है। ये बच्चे अपने व अपने परिवार के लिए मजदूरी करते हैं।

भूमिका

बाल श्रम की प्रथा भारत में बहुत प्रचलित है और इसका कारण गरीबी से गहरा है। यूनिसेफ इंडिया ने अनुमान लगाया है कि पाँच से चौदह वर्ष की आयु के 28 मिलियन बच्चे काम में लगे हैं। बाल श्रम भारत में कोई नई घटना नहीं है जहाँ बच्चों ने

हमेशा काम किया है। औधोगिक क्रांति के दौरान औपनिवेशिक देशों में श्रम आंदोलनों के स्थानांतरण के कारण बाल श्रम में वृद्धि हुई। बच्चे अनौपचारिक अर्थव्यवस्था के हर क्षेत्र में पाए जा सकते हैं।

बाल श्रम की भयावहता पर हाल ही में अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन की रिपोर्ट से पता चला है कि लगभग 250 मिलियन बच्चे किसी न किसी तरह के कामों में लगे हुए हैं, जिनमें से 120 मिलियन पूर्णकालिक कार्यकर्ता हैं और 130 मिलियन अंशकालिक श्रमिक हैं। रिपोर्ट कहती है, एशिया में 153 मिलियन कामकाजी बच्चे, अफ्रीका में लगभग 80 मिलियन और लैटिन अमेरिका में 17.5 मिलियन कामकाजी बच्चे हैं। हाल ही में के सर्वेक्षण के अनुसार, भारत, घाना, इंडोनेशिया और सेनेगल जैसे चुनिंदा देशों में उन देशों के कुल कार्यबल में 15 प्रतिशत बच्चे श्रमिक हैं। सांख्यिकीय अनुमानों से पता चला है कि, दुनिया में काम करने वाले बच्चों की संख्या 5 से 14 वर्ष के बीच लगभग 200 मिलियन है। 2011 की जनगणना से पता चला है कि 5–14 आयु वर्ग के बाल श्रमिकों की कुल संख्या 4.35 मिलियन है और उस आयु वर्ग में कुल बाल जनसंख्या 259.64 मिलियन है। भारत दुनिया में 14 वर्ष से कम आयु के बाल श्रमिकों की सबसे बड़ी संख्या के साथ खड़ा है और जैसा कि भारत की जनगणना, 2011 द्वारा खुलासा किया गया है, अनुमानित 12.67 मिलियन बच्चे खतरनाक व्यवसायों में लगे हुए हैं जो संवैधानिक कानून के खिलाफ है।

भारत में काम करने वाले बच्चे खतरनाक व्यवसायों में लगे हुए हैं जैसे हीरे, आतिशबाजी, रेशम और कालीन, कांच और ईंट बनाने वाले कारखाने। ऐसे कई कारक हैं जो बच्चों को काम करने के लिए मजबूर करते हैं जैसे अपर्याप्त आर्थिक विकास, गरीबी, जनसंख्या से अधिक बेरोजगारी और शिक्षा और स्वास्थ्य देखभाल की कमी।

बच्चे औपचारिक और अनौपचारिक दोनों क्षेत्रों में कार्यरत हैं। जिन व्यवसायों में बच्चे काम में लगे हैं उनमें निर्माण कार्य, घरेलू काम और लघु उद्योग शामिल हैं। संयोग से, कृषि न केवल सबसे पुराना बल्कि दुनिया भर में सबसे आम बाल व्यवसाय भी है। चूड़ी बनाना, बीड़ी बनाना, पावरलूम और निर्माण प्रक्रिया बाल श्रम पर निर्भर कुछ उद्योग हैं। ये उद्योग जहरीली धातुओं और सीसा, पारा, मैंगनीज, क्रोमियम, कैडमियम, बेंजीन, कीटनाशकों और अभ्रक जैसे पदार्थों का उपयोग करते हैं। बाल श्रम बहुत हानिकारक है और इसे खत्म करने के लिए पूरे मन से प्रयास किए जाने चाहिए।

बाल श्रम से संबंधित सामाजिक–आर्थिक कारक

- गरीबी मूल कारण के रूप में विभिन्न परिस्थितियाँ बाल श्रम को प्रभावित करती हैं। अध्ययनों से पता चला है कि सबसे उल्लेखनीय कारण गरीबी है। बाल श्रम और स्कूली शिक्षा के बारे में निर्णय आम तौर पर माता–पिता द्वारा लिए जाते हैं। यदि परिवार की आय गरीबी रेखा से नीचे है, तो माता–पिता सोचते हैं कि बच्चों को भी अपने परिवार की आय में योगदान देना चाहिए। नतीजतन गरीब माता–पिता अपने बच्चों के लिए स्कूली शिक्षा का खर्च नहीं उठा सकते हैं। इस प्रकार, मुख्य रूप से गरीब परिवारों को अपने बच्चों को स्कूल भेजने के बजाय जबरन मजदूरी करने के लिए भेजना पड़ता है।

• परिवार का आकार वास्तव में, बड़े गरीब परिवारों में बच्चों की भागीदारी आमतौर पर छोटे परिवारों की तुलना में अधिक होती है जो परिवार के आकार को प्रदर्शित करता है और बाल श्रम पर प्रभाव डालता है। माता–पिता अपने बच्चों को काम करने के लिए बाध्य करते हैं क्योंकि वे एक बड़े आकार के परिवार की माँगों का प्रबंधन करने में सक्षम नहीं होते हैं। घरेलू आकार के बीच लिंग अंतर भी हैं। परिवार में हर कोई और सभी उम्र के बाल श्रमिक के रूप में काम नहीं कर रहे हैं, जो कि बच्चे की उम्र और लिंग पर निर्भर करता है, उदाहरण के लिए लड़कियों की तुलना में लड़कों के स्कूल जाने की संभावना अधिक होती है।

• पारिवारिक स्थिति ऐसे कई बढ़ते बच्चे हैं जिन्होंने या तो एक या माता–पिता दोनों को खो दिया है और जो परिवार में एच.आई.वी एड्स से प्रभावित हैं, उन्हें अपना और अपने भाई–बहनों का समर्थन करने के लिए काम करने के लिए मजबूर किया जाता है। विशेष रूप से अफ्रीका में अनाथ बच्चों की संख्या बढ़ रही है, जिनमें से कई सड़क पर रहने वाले बच्चे बन जाते हैं और बहुत कठिन परिस्थितियों में रहते हैं।

• पारंपरिक या सांस्कृतिक कारक संस्कृति एक अन्य कारक है जो बच्चों को श्रम बाजार में धकेलता है। कई समाजों की विभिन्न संस्कृतियाँ बच्चों को बहुत कम उम्र में काम करना शुरू कर देती हैं जो परंपराओं और सांस्कृतिक कारकों से संबंधित हैं। उन्होंने माना कि बच्चों को ऐसे कौशल सीखने की जरूरत है जो उनके भविष्य के लिए अच्छा हो। भ्रष्टाचार संसाधनों के दुरुपयोग का एक प्रमुख कारण है, जहाँ भी गरीबी है भ्रष्टाचार भी है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (यूएनडीपी) के अनुसार भ्रष्टाचार गरीबी और असमानता को बढ़ाता है, मानव विकास और स्थिरता को कमजोर करता है और संघर्ष को बनाए रखता है, मानवाधिकारों का उल्लंघन करता है और देशों के लोकतांत्रिक कामकाज को नष्ट करता है। भ्रष्टाचार का बच्चों के अधिकार पर अत्यधिक नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है जो स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा और बुनियादी सुविधाओं जैसी बुनियादी सेवाओं से वंचित करता है। भ्रष्टाचार बच्चों की गरीबी से बचने की क्षमता को कम कर सकता है।

• गृहयु बाल श्रम में योगदान देने वाला एक अन्य कारक है। युद्ध देश की अर्थव्यवस्था को नष्ट कर देता है, लोग बहुत गरीब हो जाते हैं और सभी संसाधन युद्ध में चले जाते हैं। युद्ध सभी अच्छी चीजों को जला देते हैं जो किसी भी देश के पास हो सकती हैं। यह रोग, गरीबी, नुकसान और कई अन्य भयानक चीजें लाता है। फिर से, जब तक युद्ध जारी रहेगा तब तक कोई मदद काम नहीं आएगी।

• शहरी प्रवास कई ग्रामीण परिवार ग्रामीण दबाव और शहरी आकर्षण कारकों के कारण शहरी क्षेत्रों में पलायन करते हैं। इसके परिणामस्वरूप, उन्हें अक्सर सड़कों पर रहने और काम करने के लिए मजबूर किया जाता है क्योंकि उनके पास भोजन जैसी बुनियादी आवश्यकताओं तक पहुंच नहीं होती है आश्रय आदि और ये बच्चे सड़क पर विक्रेता के रूप में काम करते हैं। ज्यादातर स्ट्रीट वर्कर्स हिंसा के प्रति संवेदनशील होते हैं और चोरी, तस्करी, ड्रग्स और वेश्यावृत्ति जैसे अवैध कार्यों के लिए

अतिसंवेदनशील हो जाते हैं। ये बच्चे शहरी गरीबी में रहते हैं कई बाल श्रमिक अस्वास्थ्यकर खराब परिस्थितियों में स्लम क्षेत्रों में रहते हैं और खराब वातावरण में काम करते हैं जैसे घरेलू काम, या होटल और रेस्तरां आदि में काम करते हैं।

- इसका अर्थ है कि आप्रवासन और प्राकृतिक वृद्धि के कारण शहरों में जनसंख्या बढ़ रही है। शहरी गरीबी एक बहुआयामी परिघटना है। विकासशील देशों में शहरी गरीबी को अपने दैनिक जीवन में कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। बेरोजगारी, आवास की कमी, हिंसा और अस्वास्थ्यकर वातावरण के कारण बहुत से गरीब लोग बड़ी कठिनाई में जी रहे हैं। बढ़ते शहरीकरण के कारण शहरों में गरीबी बढ़ी है। शहरी गरीबी मलिन बस्तियों को उठाती है। इन क्षेत्रों में उच्च बेरोजगारी, खराब स्वच्छता, स्वच्छ पेयजल तक अपर्याप्त पहुंच और अपर्याप्त आवास की विशेषता है।

- वैश्वीकरण बाल श्रम का एक अन्य कारण है। वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभाव हैं, फिर भीय वैश्वीकरण विकासशील देशों को नई व्यापार संभावनाओं के माध्यम से प्रति व्यक्ति अपने सकल घरेलू उत्पादन (जीडीपी) को बढ़ाने और उनके प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) प्रवाह को बढ़ाने का अवसर दे सकता है। वैश्वीकरण ने विकासशील देशों में बाल श्रम पर भी प्रतिकूल प्रभाव डाला है। हाल के वर्षों में, कई अंतरराष्ट्रीय कंपनियों ने अपना उत्पादन विदेशों में स्थानांतरित कर दिया है।

बाल श्रम के परिणाम

यह विचार कि बाल श्रम अवांछनीय है और इसे समाप्त किया जाना चाहिए, इससे जुड़े नकारात्मक परिणामों के कारण बहुत कुछ है। वास्तव में, फिलीपींस में बाल श्रम के अधिकांश अध्ययनों ने बच्चों की आदर्श कामकाजी परिस्थितियों से कम और उनकी भलाई पर ऐसी परिस्थितियों में श्रम के परिणामों का वर्णन करने के लिए काफी जगह समर्पित की है। प्रभाव सीखने, स्वास्थ्य, मनो–सामाजिक और बच्चों के विकास के अन्य पहलुओं को छूते हैं और नीति के लिए अल्पकालिक और दीर्घकालिक दोनों तरह के होने चाहिए।

सामान्य तौर पर, अध्ययनों से संकेत मिलता है कि बाल श्रमिकों के बीच स्कूल में उपस्थिति का त्याग किया जाता है। हालांकि स्कूली शिक्षा को कई मामलों में काम के साथ जोड़ा जा सकता है, गरीबी और काम की परिस्थितियों जैसे विभिन्न कारक कामकाजी बच्चों को स्कूल जाने से रोक सकते हैं या ऐसा करने से किसी भी महत्वपूर्ण डिग्री का लाभ उठा सकते हैं। खतरनाक परिस्थितियों में काम करने वाले बच्चों के चोटिल होने या विभिन्न बीमारियों से ग्रस्त होने का भी बड़ा खतरा होता है। विषम परिस्थितियों में काम करने वाले बच्चों में मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक समस्याएं भी देखी गई हैं। इन प्रभावों का कामकाजी बच्चों की भविष्य की उत्पादक क्षमता और कमाई की क्षमता पर प्रभाव पड़ता है। मानव पूंजी में निवेश करने में विफलता का मतलब है कि आज के कामकाजी बच्चे कल के गरीब माता–पिता होंगे, जो बच्चे उन्हें पसंद करते हैं उन्हें समय से पहले श्रम बाजार में धकेल दिया जाएगा। बाल श्रम, विशेष रूप से सबसे खराब रूप, उन्हीं स्थितियों को पुन उत्पन्न करने की प्रवृत्ति रखता है जो इसे लेकर आए थे।

कामकाजी बच्चों द्वारा सामना की जाने वाली विभिन्न प्रकार की स्थितियों को देखते हुए, इस जानकारी के आधार पर बाल कार्य और स्कूल की उपस्थिति के बीच सटीक संबंध के बारे में कोई निष्कर्ष निकालना मुश्किल है। एक बात के लिए, अधिकांश बाल श्रमिक ग्रामीण क्षेत्रों में पाए जाते हैं जहाँ काम अत्यधिक मौसमी होता है और गैर–कृषि क्षेत्र में नियमित काम के रूप में समय–गहन नहीं होता है। इसलिए, यह संभव है कि स्कूल में गैर–उपस्थिति अन्य कारणों से हो सकती है जैसे कि इलाके में स्कूलों की कमी या वित्त की कमी के कारण शिक्षा की सामान्य अनुपलब्धता। इस मामले में, स्कूल जाने में असमर्थता का परिणाम कम हो सकता है और बाल श्रम का कारण होने की संभावना अधिक हो सकती है। अधिकतम दृ ष्टिकोण से, स्कूल की तुलना में काम पर बिताया गया समय अधिक प्रतिफल देता है।

फिर भी, यह मानने का कारण है कि काम करने वाले बच्चों को स्कूल में नुकसान का सामना करना पड़ता है क्योंकि उन्हें काम करना पड़ता है। काम करने वाले बच्चों ने बताया कि काम ने स्कूल में उनके प्रदर्शन को प्रभावित किया, निम्न ग्रेड और पाठों को पकड़ने में कठिनाई के रूप में प्रकट हुआ। जब स्कूल का प्रदर्शन काम के परिणामस्वरूप प्रभावित होता है, तो स्कूल छोड़ना कामकाजी बच्चों के लिए एक संभावित विकल्प बन जाता है।

बाल कार्य, स्कूल में खराब प्रदर्शन, और अंततः गैर–उपस्थिति के बीच संबंध विभिन्न मार्ग अपना सकता है जैसा कि कई प्रलेखित मामलों में दिखाया गया है। सामान्य तौर पर, काम और अध्ययन के बीच विभाजित समय एक बच्चे को बाद में ध्यान केंद्रित करने की अनुमति नहीं देता है, जिससे वह अपने पाठों में पीछे रह जाता है और कम ग्रेड प्राप्त करता है। इसलिए, काम की शर्तें महत्वपूर्ण हैं क्योंकि वे स्कूल के काम को निपटाने के लिए बच्चे की तैयारी को प्रभावित कर सकती हैं। उदाहरण के लिए, पूरी रात मछली पकड़ने के बाद, कुकुब में शामिल बच्चे स्कूल जाने के लिए बहुत थक जाते हैं।

अनुपस्थिति एक और समस्या है जिसके कारण कामकाजी बच्चे स्कूल के प्रदर्शन में पिछड़ सकते हैं। बाल घरेलू कामगारों के बीच यह स्थिति है, जिन्हें अक्सर अनुपस्थित रहना पड़ता है, घरेलू काम के लिए विशिष्ट अनुबंधों के ढीलेपन और बच्चों की आमतौर पर विनम्र प्रवृत्ति को देखते हुए इसका लाभ उठाने के लिए नियोक्ताओं के बीच प्रोत्साहन का एक संभावित परिणाम है। वेंडिंग और वेश्यावृत्ति में शामिल बच्चों को उनके काम के अनियमित शेड्यूल के कारण लगातार स्कूल जाने से भी रोका जाता है।

इन जोखिमों में रोग लगने की संभावना, शारीरिक विकृति, वाहन दुर्घटना में शामिल होना, या ऊंचे स्थानों से गिरना शामिल है। खासकर महिलाओं में किसी बीमारी के होने का खतरा ज्यादा होता है।

इसी सर्वेक्षण के अनुसार, कामकाजी बच्चों द्वारा अनुभव की जाने वाली सबसे आम स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं शरीर में दर्द (59 प्रतिशत) और त्वचा रोग (22 प्रतिशत) हैं। दूसरों ने आंखों में तनाव, सांस की बीमारियों, गैस्ट्रो–आंतों की समस्याओं और बिगड़ा हुआ सुनने की सूचना दी।

राष्ट्रीय सर्वेक्षण के निष्कर्ष देश के विभिन्न हिस्सों में विशेष उद्योगों में काम करने वाले बच्चों के विशिष्ट समूहों के बीच अलग–अलग समय पर किए गए छोटे सर्वेक्षणों और केस अध्ययनों से प्राप्त टिप्पणियों को पुष्ट करते हैं। इन अध्ययनों में दोनों सामान्य बीमारियों का अवलोकन किया गया, जो काम करने वाले बच्चों को पीड़ित करती हैं, भले ही वे किसी भी गतिविधि में शामिल हों, साथ ही विशिष्ट प्रकार के काम से अधिक मजबूती से जुड़े हुए प्रतीत होते हैं।

हालांकि इनमें से कई अध्ययनों से यह स्पष्ट नहीं है कि गैर–कामकाजी बच्चों ने किस हद तक इन लक्षणों का अनुभव किया होगा, यह मान लेना उचित लगता है कि यदि बच्चे जोरदार शारीरिक परिश्रम में लगे हैं, उचित पोषण की कमी है, तो वे बीमार होने के लिए अधिक उत्तरदायी हैं, और या तो अस्वास्थ्यकर परिस्थितियों में काम करते हैं या लंबे समय तक मौसम में अत्यधिक परिवर्तन के संपर्क में रहते हैं।

वेश्यावृत्ति में बच्चों को विशेष रूप से यौन संचारित रोगों से ग्रस्त होने और विभिन्न शारीरिक चोटों से पीड़ित होने का खतरा होता है।

कॉर्डिलेरा में हॉलर के रूप में काम करने वाले बच्चों के साथ–साथ अबाका में गन्ना उत्पादन में उत्खनन और आतिशबाजी निर्माण में काम करने वाले बच्चों के बीच दुर्घटनाओं के कारण विभिन्न शारीरिक चोटें, कभी–कभी मृत्यु भी देखी गई हैं।

खतरनाक रसायनों, विस्फोटकों, फार्मास्युटिकल रिजेक्ट्स और अन्य असुरक्षित वस्तुओं के निरंतर संपर्क से उत्पन्न होने वाले स्वास्थ्य के लिए जोखिम विशेष रूप से मैला ढोने वाले बच्चों में अधिक है।

उपलब्ध जानकारी के आधार पर बताना मुश्किल है कि ऊपर बताए गए स्वास्थ्य परिणाम और जोखिम बाल श्रम के लिए सीधे तौर पर जिम्मेदार हैं या नहीं। सबसे पहले, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और कथित जोखिमों के बारे में प्रश्न केवल कामकाजी बच्चों के बीच पूछे गए थे। एकत्र की गई जानकारी भी केवल एक बिंदु को संदर्भित करती है, जो रोजगार या सर्वेक्षण अवधि तक ही सीमित है। इस प्रकार, डेटा से यह बताना संभव नहीं है कि क्या कामकाजी बच्चे गैर–कामकाजी बच्चों की तुलना में रिपोर्ट की गई बीमारियों और जोखिमों के प्रति अधिक संवेदनशील हैं और क्या कामकाजी बच्चे रोजगार से पहले भी बीमार थे। एट्रिब्यूशन समस्या इस तथ्य से जटिल हो जाती है कि बच्चे भी कई नौकरियों में लगे हो सकते हैं, जबकि स्वास्थ्य परिणामों और कथित जोखिमों के बारे में प्रश्न सामान्य हैं, यानी वे किसी विशिष्ट गतिविधि से संबंधित नहीं हैं। इन अपर्याप्तताओं को आम तौर पर साझा किया जाता है, हालांकि कुछ हद तक, विभिन्न केस स्टडीज के डेटा द्वारा।

अच्छे कारण हैं कि समाज को बच्चों के स्वास्थ्य और सामान्य कल्याण पर काम के परिणामों से क्यों चिंतित होना चाहिए। उनके काम के माहौल में विभिन्न खतरों के लगातार संपर्क, विशेष रूप से रासायनिक और जैविक जो अदृश्य हैं, बच्चों के स्वास्थ्य और जीवन को बड़े जोखिम में डालते हैं। जबकि समान परिस्थितियों में काम करने वाले वयस्कों को समान जोखिमों का सामना करना पड़ता है – न्यूनतम स्वास्थ्य और सुरक्षा नियमों के लिए एक तर्क – बच्चे विशेष रूप से काम से संबंधित बीमारियों के प्रति संवेदनशील होते हैं। उनकी अभी तक अविकसित जैविक प्रक्रियाएं उनके शरीर को उन रसायनों और अन्य

विषाक्त पदार्थों के प्रति कम प्रतिरोधी बनाती हैं जिनके वे नियमित रूप से संपर्क में आते हैं। उचित पोषण की कमी, जो गरीबों के बीच विशेषता है, इसके अलावा काम करने वाले बच्चों को काम के छोटे और दीर्घकालिक कमजोर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति संवेदनशील बनाता है, जो आर्थिक रूप से उत्पादक जीवन को कम कर सकता है।

हालांकि, पूर्वगामी कारणों से बाल श्रम के प्रतिकूल परिणामों को संबोधित करने के लिए अधिक व्यवस्थित दृष्टिकोण को रोकना नहीं चाहिए। नीतिगत दृष्टिकोण से, यह पूछना समझ में आता है कि कौन से स्वास्थ्य संबंधी परिणाम सामान्य गरीबी के कारण हैं, कौन से बाल श्रम के लिए हैं, और कौन से बाल श्रम के विशिष्ट रूपों के लिए हैं। जीवित रहने की रणनीति के रूप में इसकी प्रकृति को देखते हुए, बाल श्रम को समाप्त करने का गरीब परिवारों के लिए नकारात्मक परिणाम होना तय है, जब तक कि बेहतर विकल्प नहीं दिए जाते। हालांकि, वास्तविक रूप से, गुणवत्तापूर्ण बुनियादी शिक्षा का प्रावधान और वयस्क श्रम बाजार में आय और अवसरों में सुधार रातोंरात नहीं हो सकता है, लेकिन विकास को बढ़ावा देने और गरीबी से लड़ने के लिए दीर्घकालिक रणनीति के संदर्भ में ही इसे प्राप्त किया जा सकता है।

इस बीच, सरकार बाल श्रम को खत्म करने के लिए खराब तरीके से तैयार किए गए कार्यक्रमों पर समाज के सीमित संसाधनों का उपयोग करने का जोखिम उठा सकती है। यह बाल श्रम के नकारात्मक परिणामों का पता लगाने के महत्व को विशिष्ट गतिविधियों, कार्य वातावरण, या यहां तक कि बाल कार्य के विशेष रूपों में सामने लाता है। ऐसी जानकारी बाल श्रम से निपटने के लिए कार्रवाई के वैकल्पिक तरीकों का आधार बन सकती है।

बाल श्रम का मूल कारण सामाजिक—आर्थिक पृष्ठभूमि है जो एक समाज का आधार है। अत्यधिक आबादी वाला लेकिन आर्थिक रूप से पिछड़ा देश होने के नाते, भारत में गरीबी के स्तर से नीचे रहने वाले लोगों की एक बड़ी संख्या शामिल है। नतीजतन, अपने स्वयं के श्रम के अलावा, माता—पिता अपने बच्चों को ्अस्तित्व के लिए संघर्ष में शामिल करते हैं, जो इस प्रकार घरेलू दासता या विभिन्न औद्योगिक क्षेत्रों का हिस्सा बन जाते हैं। एक अन्य प्रमुख कारण आर्थिक रूप से पिछड़े वर्गों के लिए उचित शिक्षा और स्कूलों की कमी कहा जा सकता है। वास्तव में, भारत में स्कूलों के लिए एक उचित बुनियादी ढांचे का अभाव है जो इन बच्चों को मुफ्त शिक्षा प्रदान कर सकता है और ग्रामीण क्षेत्रों या गांवों में रहने वालों के लिए भी। जबकि माता—पिता को अपने बच्चों, विशेषकर बेटों को कृषि कार्यों में लगाना अधिक सुविधाजनक लगता है, जो अपने परिवार के लिए दैनिक मजदूरी कमा सकते हैं।

योग्यता वाले कई लड़के दूसरे राज्यों में विभिन्न कारखानों में काम करके अपनी आजीविका कमाने के लिए सत्र के बीच में ही स्कूल छोड़ देते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों या गाँवों के मेधावी लड़कों को अक्सर उनके माता—पिता अश्रुपूर्ण आँखों से हमेशा के लिए स्कूल छोड़ने के लिए मजबूर करते हैं और उन्हें काम की तलाश में दूसरे राज्य में जाना पड़ता है क्योंकि उनके माता—पिता उनकी अत्यधिक गरीबी के कारण स्कूल की फीस का भुगतान जारी रखने से इनकार करते हैं।

बाल श्रम का मुद्दा एक विश्वव्यापी घटना है जिसे शोषक और अमानवीय माना जाता है। बाल श्रम पूरी दुनिया में किसी न किसी रूप में व्यापक रूप से प्रचलित है। इस शब्द का प्रयोग घरेलू काम, कारखाने के काम, कृषि, खनन, उत्खनन, खुद का

काम या व्यवसाय जैसे खाना बेचना आदि, माता–पिता के व्यवसाय में मदद करना और छोटे–मोटे काम करने के लिए किया जाता है। बच्चों को नियमित रूप से पर्यटकों का मार्गदर्शन करने के लिए नियोजित किया जाता है, कभी–कभी दुकान मालिकों और अन्य व्यावसायिक प्रतिष्ठानों के लिए व्यवसाय लाने के लिए विपणन शक्ति के रूप में दोगुना हो जाता है। कुछ उद्योगों में बच्चों को दोहराए जाने वाले और थकाऊ काम करने के लिए मजबूर किया जाता है जैसे कालीन बुनना, बक्सों को जोड़ना, जूते पॉलिश करना, सफाई करना और दुकानों का सामान व्यवस्थित करना। यह देखा गया है कि कारखानों और वाणिज्यिक पंजीकृत संगठनों की तुलना में बच्चे अनौपचारिक क्षेत्रों में अधिक काम करते पाए जाते हैं। छोटे बच्चे अक्सर घरों की ऊंची दीवारों के भीतर गलियों में बेचते या घरेलू नौकरों के रूप में काम करते देखे जाते हैं – बाहरी दुनिया की नजरों से दूर। बच्चों का उपयोग सैन्य उद्देश्य और बाल वेश्यावृत्ति के लिए किया जाता है। बाल श्रम का सबसे भयावह रूप वेश्यावृत्ति और बाल पोर्नोग्राफी के लिए मॉडलिंग है। कुछ बच्चों को पैसे के लिए उनके माता–पिता जागीरदारों को बेच भी देते हैं।

बाल श्रम बच्चों के अधिकारों की विस्तृत श्रृंखला का शुद्ध उल्लंघन है जो औद्योगिक क्रांति की शुरुआत के बाद से दुनिया भर में श्रम बाजार पर हावी रहा है। हालाँकि दुनिया भर के कानून अब इस प्रथा को शोषक और निषेधात्मक मानते हैं, कई विकासशील देश उच्च गरीबी और खराब स्कूली शिक्षा के अवसरों के कारण अभी भी बाल श्रम के कई मामले प्रदर्शित करते हैं। भारत इस मामले में कोई अपवाद नहीं है जहां कई बच्चों के मूल अधिकारों को आमतौर पर सड़कों, रेस्तरां, कृषि क्षेत्रों या शायद हर नुक्कड़ पर छीना जाता देखा जा सकता है जो श्रम कार्य से जुड़ा हो सकता है।

बाल श्रम की घटना एक प्रमुख मानवाधिकार मुद्दा है और अत्यधिक भावनात्मक भी है। यह एक वैश्विक घटना है, जो दुनिया के लगभग सभी देशों में मौजूद है। बाल श्रम की अवधारणा और अभ्यास आर्थिक रूप से अस्वस्थ, मनोवैज्ञानिक रूप से गलत और सामाजिक रूप से विनाशकारी होने के कारण शांति और समग्र विश्व विकास के लिए एक बड़ा खतरा बन गया है। इस 21वीं सदी में भारत की वर्तमान स्थिति में बाल श्रम की व्यवस्था के संबंध में कोई बेहतर सुधार होने का दावा नहीं किया जा सकता है। समाज के निचले तबके के बच्चे अभी भी मानव–जानवरों के ऊपरी वर्ग द्वारा पीड़ित हैं, जो उन्हें विभिन्न क्षेत्रों में फैक्ट्री–मजदूर, होटल के लड़के, घर की नौकरानी आदि के रूप में नियुक्त करके उन्हें गुलाम बनाते हैंय जबकि उनके माता–पिता भी उन्हें ऐसा करने के लिए समान रूप से प्रोत्साहित करते हैं। इस संबंध में बाल तस्करी को बाल श्रम की प्रणाली के तहत वर्गीकृत किया जा सकता है, क्योंकि यह तस्करों द्वारा बड़े पैमाने पर आय का एक तरीका है। कुछ माता–पिता अपने बच्चों को सड़क पर भिखारी के रूप में काम पर रखकर पैसे के लिए खुद को नीचा दिखाते हैं, जो सोचते हैं कि अमीर और अच्छे लोगों से सहानुभूति अर्जित करके बेहतर पैसा कमा सकते हैं।

बच्चों के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्तरों पर नकारात्मक प्रभाव में बाल श्रम की विशिष्ट चिंताएँ और मानसिक स्वास्थ्य पर इसके परिणाम शामिल हैं। गौरतलब है कि विकासशील देशों के एक तिहाई बच्चे 4 साल की शिक्षा भी पूरी करने में असफल हो रहे हैं। गरीब परिवार अपने बच्चों को शिक्षा से वंचित करते हैं क्योंकि वे अपने बच्चों को काम पर भेजते हैं। गरीब बच्चा बहुत ही कम उम्र में परिवार का भरण–पोषण करेगा और रोटी और मक्खन कमाएगा। अशिक्षित माता–पिता अपने बच्चों को बुनियादी शिक्षा तक से वंचित कर देते हैं। खतरनाक कारकों में बच्चों की व्यस्तता के लिए अग्रणी कारकों का विश्लेषण

महत्वपूर्ण निर्धारकों में से एक के रूप में सामाजिक आर्थिक कारकों को स्पष्ट करता है। गरीबी को बाल श्रम में सहायक कारकों में से एक माना जाता है।

उचित उम्र में बाल श्रम भविष्य में बच्चों के लिए स्वास्थ्य के संबंध में समस्या पैदा करता है। बच्चों को कड़ी मेहनत करने के लिए मजबूर किया जाता है जो कम उम्र में उनके शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित करता है। बाल श्रमिक स्वास्थ्य समस्याओं से ग्रस्त हैं। वे अनपढ़ रहते हैं और उन्हें माता–पिता की कोई देखभाल नहीं मिलती है। असीमित शोषण और काम में आने वाली कठिनाइयाँ उनके व्यक्तित्व विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालती हैं। कहा जाता है कि दुनिया में सबसे ज्यादा बाल मजदूर भारत में हैं। यह देश की खराब छवि देता है और सरकार को भी खराब चित्रित करता है।

संदर्भ

1. फोजिया फातिमा (2016) यूके, यूएसए, भारत और पाकिस्तान के भीतर बाल श्रम के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण और तीक्ष्णता का तुलनात्मक विश्लेषण। अमेरिकन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च। वॉल्यूम। 4. नंबर 18. 2016. पी. 1271–1280।

2. गायत्री उमापति (2017) भारत में बाल श्रम के अस्तित्व पर एक अध्ययन। जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस। वॉल्यूम। 22. नंबर 7. वर। 8. जुलाई 2017. पृ. 35–37.

3. जॉर्ज, एलेक्स और पांडा, समीत (2020) बाल श्रम कानून संशोधन सामाजिक गतिशीलता पर ब्रेक लगाना। आर्थिक और राजनीतिक साप्ताहिक। वॉल्यूम। 50. नंबर 38. 19 सितंबर, 2015. 16–19।

4 इरावनी, मोहम्मद रजा (2021) रोल ऑफ सोशल वर्कर्स इन सपोर्टिंग गर्ल चाइल्ड लेबर एंड देयर फैमिलीज, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ बिजनेस एंड सोशल साइंस, वॉल्यूम। 2, संख्या 18, अक्टूबर 2011, पीपी 119–125।

5. जांगिड़, सुनील कुमार (2020) भारत में बाल श्रम कानून, नीति और कार्यक्रम। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड रिसर्च। वॉल्यूम। 2. नंबर 7. जुलाई 2013. पी. 167–170।

6. जॉर्ज गोमेज परेडेस, एट अल (2016) भारतीय उत्पादन और वैश्विक खपत में बाल श्रम की भूमिका का आकलन। जर्नल ऑफ इंडस्ट्रियल इकोलॉजी। वॉल्यूम। 20. नंबर 3। 2016. पी. 611–622।

7. ज्योति रानी (2019) हरियाणा में असंगठित ऑटो–मरम्मत क्षेत्र में काम करने वाले बाल मजदूरों की कामकाजी परिस्थितियों का अध्ययन। पारिपेक्स इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च। वॉल्यूम। 2. नंबर 12. दिसंबर 2013. पी. 23–25।

8. कल्पना श्रीवास्तव (2020) बाल श्रम मुद्दे और चुनौतियां। औद्योगिक मनोरोग जर्नल। वॉल्यूम। 20. नंबर 1. जनवरी–जून 2011. पी. 1–3।

9. कांबले, टीए (2018) चाइल्ड लेबर इन इंडिया एन एब्यूज टू ह्यूमन राइट। एशियन जर्नल ऑफ मल्टीडायमेंशनल रिसर्च। वॉल्यूम। 5. नंबर 2. फरवरी 2016।